पाठ 9. लोकमान्य तिलक

पाठ का उद्देश्य

प्रस्तुत पाठ का उद्देश्य बच्चों को भारत के स्वतंत्रता संग्राम के वीर एवं महान स्वतंत्रता सेनानियों में से एक लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक के बचपन से लेकर स्वतंत्रता संग्राम के संघर्ष तथा समाज सुधारक के रूप में उनके योगदान से अवगत कराना है। साथ ही, उस समय देश की स्थिति तथा लोगों की दशा के बारे में भी बच्चों को जानकारी दी गई है।

पाठ का सारांश

'स्वराज्य' प्राप्ति को जन्मसिद्ध अधिकार मानने वाले तथा देशवासियों को यह नारा देकर स्वतंत्रता के लिए प्रोत्साहित करने वाले बाल गंगाधर तिलक बचपन से ही बहुत कुशाग्रबुद्धि बालक थे। उनके मित्र उन्हें 'बाल' कहकर पुकारते थे। तिलक जी ने न केवल आज़ादी की मशाल को तेज़ करने का काम किया अपितु उन्होंने समाज में व्याप्त बाल विवाह जैसी कुप्रथा के विरुद्ध भी आवाज़ उठाई। उन्होंने विधवा विवाह तथा स्त्री शिक्षा को भी समाज में मान्यता दिलाने का भरसक प्रयत्न किया। देश की जनता के बढ़ते समर्थन के कारण अंग्रेज़ों ने उन्हें राजद्रोह के आरोप में छह वर्ष के लिए मांडले जेल में डाल दिया। अपने कठोर कारावास के दिनों में उन्होंने 'गीता रहस्य' नामक पुस्तक की रचना की। जेल से रिहा होने के बाद उन्होंने एक बार फिर अंग्रेज़ों के विरुद्ध स्वतंत्रता प्राप्ति का शंखनाद कर डाला। भारत सदैव तिलक जी के बलिदान को याद कर उन्हें नमन करता रहेगा।

अध्यापन संकेत

पाठ पठन से पूर्व **पहले पहल** में पूछे गए प्रश्नों पर बच्चों से चर्चा करें। पाठ का स्वयं वाचन करें, फिर एक-एक अंश बच्चों से भी पढ़वाएँ। बच्चों से स्वाधीनता संग्राम से संबंधित चर्चा करें कि किस प्रकार देश को आज़ाद करवाने के लिए अनगिनत देशभक्तों ने अपना जीवन बलिदान कर दिया।

बच्चों से पूछें तथा समझाएँ–

- ❖ बच्चों से कुछ स्वतंत्रता सेनानियों के नाम बताने को कहें।
- ❖ उन्हें बाल विवाह, विधवा विवाह, स्त्री शिक्षा आदि के संबंध में जानकारी दें।
- ❖ तिलक जी के नारे के बारे में बात करते हुए बच्चों को कुछ और प्रसिद्ध देशभक्ति नारों जैसे–'अंग्रेज़ों भारत छोड़ो', 'तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आज़ादी दूँगा' आदि की चर्चा करें। बच्चों को बताएँ कि ये प्रसिद्ध नारे किस-किसने दिए थे।

डिजिटल (Digital) के माध्यम से पाठ की ई-बुक विद्यार्थियों को दिखाकर पाठ के प्रत्येक अंग का स्पष्टीकरण कीजिए। गतिविधियों की दुनिया से परिचय भी कराइए।